

We are only talking about Subash Chandra Bose. I request everybody to sit down now and I will call other persons.

SHRI V. GOPALSAMY: I respect the observations of the Chair.

THE DEPUTY CHAIRMAN: It is very nice of you.

SHRI V. GOPALSAMY: When a Member of Parliament expresses his opinion about Netaji, I am also entitled to express my opinion. (Interruptions).

THE DEPUTY CHAIRMAN: If he has said anything which is controversial, it will not be on record. Mr. Bhubaneswar Kalita, if I allow you, then I have to allow everybody.

SHRI BHUBANESWAR KALITA (Assam): Madam, just one point. It is very important. While associating myself with the sentiments expressed by my friend, Shri S.S. Ahluwalia, I want to say one thing. Madam there is a systematic design in that part of the country of belittling the freedom movement and damaging the status of our national leaders. It is not the only case. There have been other cases also. I request the Government to strengthen the Central Intelligence agencies. They are very poorly manned and have poor information. Recently, we have seen how a defence convoy was attacked by the terrorists and 23 people were killed. This shows how poor is the defence information, how poor is the information of the Central Intelligence agencies working over there. Through you, Madam, I request the Government to strengthen the Central Intelligence agencies there so that before these incidents take place and before these damages are done, they can take some precaution. Thank you.

THE DEPUTY CHAIRMAN: Dr. Abrar Ahmed, as a Parliamentary Affairs Minister, kindly convey the sentiments of the House to the Govern-

ment. I mean, whatever sentiments have been expressed here regardless of the parties and by the Chair also, the feelings about what happened to the statue of Netaji Subhash Chandra Bose and whatever suggestions have come, the Government should examine them and whatever best they can do, they should do.

Plight of Indian/Hajjis in Saudi Arabia During the Haj Celebration of 1993

श्री मोहम्मद अफजल उर्फ मीम अफजल (उत्तर प्रदेश): मैडम, मैं आपके सामने इस साल जो हाजियों का मसला है, वह रखना चाहता हूँ।

मैडम, मेरे जिम्मे राज्य सभा से यह जिम्मेदारी मुझको दी गई है कि मुझे राज्य सभा की तरफ से हज कमेटी का मेम्बर नामिनेट किया गया था, जिससे मैंने 14 जून को इस्तीफा दे दिया।

मैडम, मैंने हज कमेटी से इस्तीफा देते वक्त चेयरमैन साहब को खत लिखा था। मैं उम्मीद यह करता था कि हुकूमत, जो मैंने चीजें उठाई हैं, उस पर गौर करेगी।

मैडम, इस साल हाजियों की जो दुर्गति बनी मक्का में, खास तौर पर वह मैं आपके सामने रखना चाहता हूँ। देखिये, हज कमेटी एक अहमतीन इदारा है, जो हिंदुस्तान के 25 हजार हाजियों को यहां से ले जाने और वहां उनके इंतजामात की जिम्मेदारी निभाती है। इस पर हर साल कुछ न कुछ क्विटिसिज्म होता रहता है। पिछले तीन साल से मैं भी इसका मेम्बर था और पिछले तीन साल से मैं सऊदी अरब बराबर जा रहा था।

मैडम, यह बहुत ही सेंसेटिव मजहबी मसला है मुसलमानों का और मैं इसके लिए कोई बात कहने से पहले, हुकूमत का शुक्रिया अदा करता हूँ और मैंने पहले भी ऐसा किया है कि आज तक

हिंदुस्तान में जो भी सरकार आई है, उस सरकार ने इस मामले को टाप प्रायर्टी पर इसके मसायल को हल करने की कोशिश की है और मुकम्मल कोआपरेशन दी है। मैं इस मौके पर जो हमारे मिनिस्टर आफ स्टेट फार फारेन अफेयर्स, आर. एल. भाटिया साहब हैं, मैं खास तौर पर उनका शुक्रिया अदा करता हूं कि गुजिश्ता एक साल में उन्होंने जो कोआपरेशन हज कमेटी और हाजियों के लिए दी है, मैं उनका जितना शुक्रिया अदा करूं, वह कम है। मैंने गुजिश्ता उससे दो साल पहले उतना कोआपरेशन नहीं देखा।

इसलिए, जो आज मैं खड़ा होकर कह रहा हूं, मेरी शिकायत हुकूमते-हिंद से नहीं है। मुझे सच्ची बात कहनी चाहिए, क्योंकि यह बड़ा मुक्कदस-फरीजा है—इसके अंदर में किसी को गलत बात नहीं कहना चाहना हूं। हज कमेटी वह जिम्मेदार इदारा है, जो हाजियों से पैसे लेकर उनको हवाई-जहाज से ले जाने और वहां पर अकामोडेशन का इंतजाम करती है, और उसमें शर्त यह होती है कि जब हाजी यहां से जाए, तो उसको हम हरम-शरीफ से, यानी एक्व्यूअल प्लेस आफ वरशिप जो है, वहां से चार सौ-आठ सौ मीटर की दूरी पर रहने के लिए जगह दें।

लेकिन इस साल ऐसे हालात पैदा हुए कि कांट्रैक्ट एक प्राइवेट पार्टी से किया गया। इससे पहले यह कांट्रैक्ट सऊदी अरब का एक डिपार्टमेंट है मोससा उसके जरिए से हम वहां अकामोडेशन का इंतजाम करते थे।

इस साल हमारी हज कमेटी का जो डेलीगेशन गया, उसने कुछ हालात की बुनियाद पर एक प्राइवेट पार्टी से कांट्रैक्ट किया। जब हमारा हाजी यहां से रवाना हो गया, उसके दो महीने बाद कांट्रैक्ट के, तो सऊदी गवर्नमेंट से एक मैसेज हमारी फारेन मिनिस्ट्री को मिला कि आपके हाजी पहुंचने से पहले, हज कमेटी आये और हमसे बात करे। यहां से एक डेलीगेशन गया, जिसमें फारेन

मिनिस्ट्री के ओ.एस.डी., हज, भी शामिल थे मैं भी शामिल था और आज एक्स-चेयरमैन हैं वह भी शामिल थे। हम वहां गए। हमें सऊदी मिनिस्टर साहब के सामने बैठने का मौका मिला। यह 4 अप्रैल की बात है, उन्होंने हमको बताया और 5 अप्रैल को हमारा शिप तकरीबन डेढ़ हजार हाजियों को ले करके वहां पहुंचने वाला था। उन्होंने कहा कि यह कांट्रैक्ट आपने इलीगल किया है और आपको किसी प्राइवेट पार्टी से यह कांट्रैक्ट करने का हक नहीं है। आप कांट्रैक्ट डाइरेक्ट लैंडलार्ड से तो कर सकते हैं, लेकिन बीच में किसी एजेंट को ले करके यह कांट्रैक्ट नहीं कर सकते। मैडम, हमारी दरखास्त र हज मिनिस्टर ने, उन्होंने कह दिया था कि यह इलीगल कांट्रैक्ट है। लेकिन हम 8 करोड़ रुपया उस प्राइवेट मेंबर को पे कर चुके थे और वह हाजियों की अमानत था हमारे पास और हमें उस 8 करोड़ की बड़ी फिक्क थी। लिहाजा हमने हज मिनिस्टर के आगे हाथ जोड़े। मैंने खुद हाथ जोड़े और यह कहा कि अगर यह बाय चांस गलती भी हुई है तो हमको यह मौका दिया जाए, हमारा हाजी कल आ रहा है, हम कैसे उसको करेंगे मैं सऊदी गवर्नमेंट का शुक्रगुजार हूं खास तौर पर उन मिनिस्टर साहब का कि उन्होंने इसके बावजूद कोआपरेट किया और कोआपरेट करने के बाद हाजियों का इंतजाम किया गया। लेकिन अफसोस की बात यह है कि मैडम, हाजियों को वह इंतजाम इस साल हम नहीं दे सके, जो हाजी का हक बनता है जो वह हमें 50 हजार रुपये की एक खतीर रकम अदा करते वक्त वह हम से एक्सपैक्ट करता है, जिसकी जिम्मेदारी हमारे ऊपर शायद होती है। मैं यह नहीं कह रहा हूं कि

हर काम के लिए हज कमेटी खतावार है। मैं बहुत सफाई के साथ कहना चाहता हूँ कि हिन्दुस्तान की जो एम्बेसी है, एम्बेसी की बात कर रहा हूँ, मैं कौंसिल जनरल की बात नहीं कर रहा हूँ, एम्बेसी जो है और खास तौर पर एम्बेसेडर जो हैं इशरत अजीज साहब... (व्यवधान)

उपसभापति : जो लोग यहां अपने को डिफेंड नहीं कर सकते, उनका नाम मत लीजिए और थोड़ा जल्दी कीजिए।

श्री मोहम्मद अफजल उर्फ मोम अफजल : मैडम, मैं एम्बेसी की बात करूंगा कि उसने वह कोआपरेशन नहीं दिया जो उसका फर्ज बनता था। इसके नतीजे में हाजियों को सख्त परेशानी हुई और उसके नतीजे में मैंने यह महसूस किया कि इसमें चाहे गलती किसी भी हो जिम्मेदारी बुनियादी तौर पर हज कमेटी की है। चूंकि मैं भी हज कमेटी का एक मैबर हूँ और मैडम, उससे ज्यादा शर्मनाक बात हज का मामला और अखबार में दिल्ली के अन्दर यह छपा और फिर उसके बाद पूरे हिन्दुस्तान के अन्दर छपा कि हज कमेटी के कुछ लोगों ने करोड़ों रुपये की रिश्वत एकोमोडेशन के अन्दर ले ली। मैडम, मैं यह जानना चाहता हूँ कि अगर हज कमेटी के किसी मैबर ने रिश्वत ली थी तो क्या हुकूमत का यह फर्ज नहीं है कि उसकी तहकीक करे? इसलिए कि हम पब्लिक मैन हैं। अगर मेरी हज कमेटी के किसी मैबर के ऊपर रिश्वत का इल्जाम लगता है तो मैं अपने आपको उससे बरी उस समय करार नहीं दे सकता। मैं तो उसी दिन जिस दिन यह, पहले दिन यह अखबार में खबर छपी कि हज कमेटी के किसी मैबर ने रिश्वत ली है, अगर यह खबर झूठी थी तब भी मैं इस्तीफा दे देता। लेकिन मैंने इस लिहाज से इस्तीफा नहीं दिया कि अगर मैं इस्तीफा दूंगा तो एक हैबक किएट हो जाएगा। हाजियों का हमारे जाना शुरू होने वाला था। अगर मैं

उस वक्त इस्तीफा देता तो एक हैबक किएट हो जाता और हंगामा खड़ा हो जाता, हाजियों को बहुत सख्त परेशानी होती। लिहाजा मैंने उस वक्त अपने आपको रोका और मैं खुद सऊदी अरब इस बार गया। जाकरके जो मैंने अपनी आंखों से हाजियों की दुर्दशा देखी है, मैडम, आप जानती हैं अच्छी तरह से क्योंकि आपका ताल्लुक भी उसी कम्पुनिटी से है कि एक हाजी मक्के के अंदर खड़ा हो करके कभी किसी को बद दुआ नहीं दे सकता। ... (व्यवधान) लेकिन हरम शरीफ के नीचे हाजियों ने इस तरह से खड़े हो कर हज कमेटी के मैबरान को बद दुआएं दीं तो मैंने यह सोचा कि मेरा इस कमेटी में रहना ठीक नहीं है। कमेटी चाहे मुक्कमल तौर पर इसके लिए जिम्मेदार न हो, लेकिन मैं यह समझता हूँ कि पैसा हम लेते हैं हाजी से, बेचारे गरीब हाजी को यह पता नहीं है कि यहां क्या पोलिटिक्स है। किसकी गलती है, कौन जिम्मेदार है। जिम्मेदारी बुनियादी तौर पर हज कमेटी की है। इसलिए मैंने अपना इस्तीफा फरीजा समझा कि उससे इस्तीफा दे दिया।

पहले तो मैं यह जानना चाहता हूँ कि मेरे इस्तीफे का क्या हुआ? क्या मेरा इस्तीफा एक्सेप्ट हुआ या नहीं? क्योंकि कल दोबारा हज कमेटी की मीटिंग हो रही है। मैडम, दूसरी बात मैं यह कहना चाहता हूँ कि मैंने वजीरे खारजा को (व्यवधान) नहीं, मैं बिल्कुल नहीं ... (व्यवधान) मैं तो जानना चाहता हूँ कि डेढ़ महीना हो गया (व्यवधान) ... मैं सिर्फ यह जानना चाहता हूँ कि मैंने (व्यवधान)

श्री विश्वजित पृथ्वीजित सिंह (महा राष्ट्र) : फिर आपको कल की मीटिंग की क्या परेशानी है ?

श्री मोहम्मद अफजल उर्फ मीम अफजल : विश्वजित जी, मैं कुछ बात इससे रिलेटेड कहना चाह रहा हूँ, आप सुन तो लें।

उपसभापति : अफजल साहब, आप थोड़ा सा संक्षेप में बोलें तो मेहरबानी होगी।

श्री मोहम्मद अफजल उर्फ मीम अफजल : मैडम, मैं खत्म कर रहा हूँ। मैंने यह डिमांड की थी दूसरी जो परेशानी हाजियों को हुई वह एअर लाईन्स के सिजसिले में हुई थी। इस बार एअर इंडिया ने यह कह दिया कि हमारे पास जहाज नहीं है। इंडियन एअर लाईन्स ने हमारे हाजियों को ले जाने से इन्कार कर दिया और एअर इंडिया को इंतहाई जल्दी के अंदर एयरो-फ्लोट के कुछ एअरक्राफ्ट लीज पर लेने पड़े और उनसे कांटेक्ट किया। मैडम, मैं यह जानना चाहता हूँ कि क्या हमारा यह फर्ज नहीं है, हम एअर इंडिया के सबसे बड़े क्लाइंट हैं यानी हाजी, हम 34 करोड़ रुपए के टिकिट खरीदते हैं, तो क्या यह फॉरेन एक्सचेंज बाहर जाना चाहिए ? क्या एअर इंडिया की यह ड्यूटी नहीं है कि वह यह सारा जो ट्राफिक है, खुद हैंडल करे ताकि यह हमारा पैसा मुल्क में मौजूद रहे ? आज हमने एअरो फ्लोट को जो टिकिट का पैसा फॉरेन एक्सचेंज में दिया, क्या जरूरत थी इसे बाहर भेजने की ? इसलिए मैंने यह डिमांड की थी जब मैंने वजीरे खारजा को यह खत लिखा था कि सिविल एविएशन मिनिस्ट्री को वह कहें कि वह ऐसा इंतजाम करें कि हमारा नेशनल कैरियर

खुद हाजियों को लेकर जाए और हमारा फॉरेन एक्सचेंज जाया ना हो। तीसरी डिमांड मैडम मैंने यह की थी कि इस हज कमेटी को फौरन तोड़ दिया जाए क्योंकि इस हज कमेटी के ऊपर आवाज का एतमात खत्म हो चुका है और मैंने इस्तीफा इसीलिए दिया है हालांकि मुझे भाटिया साहब ने खत लिखा है कि कमेटी रिकॉस्टीट्यूट कर रहे हैं। मैडम, आखिरी एक बात मैं यह कहना चाहता हूँ जोकि मैंने एक साल पहले भी उठाया था और आप उसकी खुद गवाह हैं और मैं समझता हूँ कि चेयर के अंदर आप उसी तौर पर मुझसे एग्री करती थी, जिस वक्त मैं मेंबर था उस वक्त मेरी मौजूदगी में, जबकि मैं मेंबर था हज कमेटी का, एक मेंबर को आनेवाली कमेटी के लिए मेंबर नामजद कर दिया गया था जोकि उसी तौर पर गलत बात थी। मैंने एहतराज किया था और यह भी कहा था कि अगर इस तरह से किसी मेंबर को अपमानित करने की कोशिश की जाएगी तो मैं इस्तीफा दे दूंगा लेकिन मैंने उस वक्त इस बात को ज्यादा बड़ा इश्यू नहीं बनाया था। अब कमेटी रिकॉस्टीट्यूट होने वाली है और मैंने चेयरमैन साहब को आज ही खत लिखा है कि जो अपाइटमेंट पहले किया गया था वह गलत था, वह रूल के खिलाफ था। यह हमारी परंपरा नहीं रही है इसलिए आप उस नाम को वापिस लीजिए और जिसको बेहतर समझें उसको हज कमेटी के अंदर नोमिनेट करें, लेकिन एक साल पहले जो अपाइटमेंट किया गया है या नोमिनेशन भेजा गया है, वह गलत है।

इन्हीं अल्फाज के साथ मैं आपका शुक्रिया अदा करता हूँ।

مشرقی محمد افضل عرف م افضل اتر پردیش
میڈیم میں آپ کے سامنے اس سال جو حاجیوں
کا مسئلہ ہے وہ رکھنا چاہتا ہوں۔

میرے ذمہ راجیہ مسجدا سے یہ ذمہ داری
تھو کہ دی گئی ہے کہ مجھے راجیہ مسجدا کی طرف سے
حج کیٹھی کا نمبر نامی نیٹ کیا گیا تھا جس نے
نے ہمارے حاجیوں کو استغفار دے دیا۔

میڈیم۔ میں نے حج کیٹھی سے استغفار دیتے
وقت پہلے میں صاحب کو خط لکھا تھا۔ میں
یہ اُمید کرتا تھا کہ حکومت جو میں نے پتہ
اٹھائی ہیں۔ اس پر غور کرے گی۔

میڈیم۔ اس سال حاجیوں کی جو درستی
ہنی ہے مکہ میں۔ خاص طور پر وہ میں آپ کے
سامنے رکھنا چاہتا ہوں۔ دیکھئے حج کیٹھی
ایک اہم ترین ادارہ ہے جو ہندوستان کے
۲۵ ہزار حاجیوں کو یہاں سے لے جانے اور
وہاں ان کے انتظامات کی ذمہ داری نبھاتی
ہے۔ اس پر ہر سال کچھ نہ کچھ کمیٹر سہارا
رہا ہے۔ سچھاپے تین سال سے میں بھی اس کا
ممبر رہا اور سچھاپے تین سال سے میں سعودی
عرب براہے جا رہا تھا۔

میڈیم۔ یہ بہت ہی سینسیٹو منڈی مسئلہ
ہے مسلمانوں کا اور میں اس کے لئے کوئی
بات کہنے سے پہلے حکومت کا شکریہ ادا کرتا
ہوں اور میں نے پہلے ہی ایسا کیا ہے کہ

آج تک ہندوستان میں جو بھی مسکرانی ہے
اس مسکرانے اس مسئلے کو ناپا پناہی ہے
اس کے مسائل حل کرنے کی کوشش کی ہے۔
اور مکمل نو آپریشن دی ہے۔ میں اس موقع پر
جو ہائے منسٹر آف اسٹیٹ فار فارن ائیریز
آر۔ ایل۔ جیٹھ صاحب نے میں خاص طور
پر ان کا شکریہ ادا کرتا ہوں کہ گزشتہ ایک سال
میں انہوں نے جو آپریشن حج کیٹھی اور حاجیوں
کے لئے دی ہے میں ان کا جتن شکریہ ادا
کروں وہ کم ہے۔ میں نے گزشتہ اس سے
دو سال پہلے اتنا نو آپریشن نہیں دیکھا
اس لئے جو آج میں کھڑا ہوں کہ کم رٹ
ہوں۔ میری شکایت حکومت ہند سے نہیں
ہے۔ مجھے سچی بات کہنی چاہیے۔ کیوں کہ یہ
بڑا مقدس فریضہ ہے۔ اس کے اندر میں کسی
کو غلط بات نہیں کہنا چاہتا ہوں۔ حج کیٹھی
وہ ذمہ دار ادارہ ہے جو حاجیوں سے پیسے
لے کر ان کو دعائی جہاز سے لے جانے اور وہاں
پر اکاموڈیشن کا انتظام کرتی ہے اور اس میں
شرط یہ ہوتی ہے کہ جب حاجی یہاں سے جاتے
تو اس کو ہم حرم شریف سے یعنی ایکچول پلیس
آف ورشپ جو وہاں ہے وہاں سے چار سو۔
آٹھ سو میٹر کی دوری پر پہنچے کیلئے جگہ دیں۔
لیکن ہر سال ایسے حالات پیدا ہوتے
کہ کنٹرکٹ ایک پرائیویٹ پارٹ سے کیا گیا

اس سے پہلے یہ کانٹریکٹ سعودی عرب کا ایک ڈیپارٹمنٹ ہے مونس۔ اس کے درجے سے ہم وہاں اکو موڈیشن کا انتظام کرتے تھے۔

اس سال ہماری جج کمیٹی کا جوڈیٹل گیش گیا۔ اس نے کچھ حالات کی بنیاد پر ایک پرائیویٹ پارٹی سے کانٹریکٹ کیا۔ جب ہمارا حاجی یہاں سے روانہ ہو گیا۔ اس کے دو مہینے بعد کانٹریکٹ کے۔ تو سعودی عرب گورنمنٹ سے ایک میسج ہماری فارن فیسٹری کو ملا کہ آپ کے حاجی پہنچنے سے پہلے۔ جج کمیٹی آئے اور ہم سے بات کرے۔ یہاں سے ایک ڈیلی گیشن گیا جس میں فارن فیسٹری کے اور ایس۔ ڈی۔ جج بھی شامل تھے میں بھی شامل تھا اور آج ایکس چیمبر میں وہ بھی شامل تھے۔ ہم وہاں گئے۔ ہمیں سعودی فیسٹر صاحب کے سامنے بیٹھنے کا موقع ملا۔ یہ ۴ اپریل کی بات ہے۔ انہوں نے ہم کو بتایا اور ۵ اپریل کو ہمارا شپ تقریباً ڈیڑھ گھنٹہ حاجیوں کو لیکر کے وہاں پہنچنے والا تھا۔ انہوں نے کہا کہ یہ کانٹریکٹ اپنے الیکٹریکل کیا تھا ہے اور آپ کو کسی پرائیویٹ پارٹی سے یہ کانٹریکٹ کرنے کا حق نہیں ہے۔ آپ کانٹریکٹ لینڈ لارڈ سے تو کر سکتے ہیں۔ لیکن بیج میں کسی پارٹی ایجنٹ کو لیکر کے

یہ کانٹریکٹ نہیں کر سکتے۔ میڈم۔ ہماری وزارت اس بار جج فیسٹری نے انہوں کو دیا تھا کہ یہ الیکٹریکل کانٹریکٹ ہے۔ لیکن ہم آٹھ کروڑ۔ اس پرائیویٹ فیر کو پے کر چکے تھے۔ اور وہ حاجیوں کی امانت تھا۔ ہمارے پاس اور ہیں اس آٹھ کروڑ کی فیسٹری ٹھہرتی۔ لہذا ہم نے جج فیسٹری کے آگے ہاتھ جوڑے میں نے خیر اقدار جوتے سے اور یہ کہا کہ اگر یہ باقی چانس خدائی میں ہوتی ہے۔ تو ہم کو موقع دیا جائے۔ ہمارا اوائلی گن آسٹریلیا سے ہم کیسے اس کو کریں گے میں سعودی گورنمنٹ کا شکریہ گزاروں یہ خاص طور پر ان فیسٹر صاحب کا کہ انہوں نے اس کے باوجود کنڈیکٹ کیا اور کو آپریٹ کرنے کے بعد حاجیوں کا انتظام کیا گیا اور لیکن افسوس کی بات یہ ہے کہ میڈم۔ حاجیوں کو وہ انتظام اس سال ہم نہیں دے سکے۔ جب حاجی کا حق بنتا ہے۔ حدود ہیں۔ وہ ان کے لئے ہے کی ایک فیسٹر رقم ادا کرتے وقت وہ ہم سے ایک پیکیٹ کھاتہ ہے۔ جس کی ذمہ داری ہمارے اوپر عائد ہوتی ہے۔ میں یہ نہیں کہہ رہا ہوں کہ ہر کام کے لئے جج کوئی خطا وار ہے۔ میں بہت عفوئی کے ساتھ کہنا چاہتا ہوں کہ ہندوستان کی ہوا ابھی ہے۔ انیسویں کی بات کر رہا ہوں۔ میں کاؤنسل ہنری کی بات نہیں کر رہا ہوں۔ ابھی ہے اور خاص طور سے ابھی ہے۔

جو بی عشرت عزیز صاحب... مداخلت...
اپ سہا جی: جو لوگ یہاں اپنے کو
ڈیفنڈ نہیں کر سکتے ان کا نام مت لیجئے
اور تھوڑا جلدی کیجئے۔

شری محمد افضل عرفان م۔ افضل بیڈم۔
میں ایک بیسی کی بات کروں گا کہ اس نے
وہ کو آپریشن نہیں دیا جو اس کا فرس بننا
تھا۔ اس کے نتیجہ میں حاجیوں کو سخت
پریشانی ہوئی اور اس کے نتیجہ میں میں نے
محسوس کیا کہ اس میں چاہے غلطی کسی کی
بھی ہو ذمہ داری بنیادی طور پر سچ کیٹی کی
ہے۔ چونکہ میں بھی سچ کیٹی کا ایک نمبر ہوں
اور میڈم۔ اس سے زیادہ شرمناک بات
سچ کا معاملہ اور اعتبار میں دلی کہ اندر یہ
چھپا اور اس کے بعد آپ سے ہندوستان
کے اندر چھپا کہ سچ کیٹی کے کچھ لوگوں
نے کھڑوں اور آپ کی رشتہ اکاؤنٹین
کے اندر بی۔ بیڈم۔ میں یہ جاننا چاہتا
ہوں کہ اگر سچ کیٹی کے کسی نمبر سے رشتہ
لی تھی تو کیا حکومت کا یہ فرس نہیں ہے
کہ اس کی تحقیق کرے۔ اس لئے کہ ہم یہ کہہ
میں ہیں۔ اگر میری سچ کیٹی کے کسی نمبر کے
ادب رشتہ کا الزام لگتا ہے تو میں اپنے
آپ کو اس سے بری والا تم قرار نہیں دے
سکتی۔ میں تو اس دن جس دن یہ پہلے

دن یہ اخبار میں خبر چھپی کہ سچ کیٹی کے کسی
نمبر نے رشتہ لی ہے۔ اگر یہ خبر بھول تھی
تو تب بھی میں استعفیٰ دے دیتا لیکن میں
نے اس لحاظ سے استعفیٰ نہیں دیا کہ اگر
میں استعفیٰ دوں گا تو ایک ہیوک کر تیل
ہو جائے گا حاجیوں کا بھاری آنا شروع ہو لے
والا تھا۔ اگر میں اس وقت استعفیٰ دے دیتا
تو ایک ہیوک کھڑا کر تیل ہو جاتا اور سنگامہ
کھڑا ہو جاتا حاجیوں کو بہت سخت پریشانی
ہوتی۔ لہذا میں نے اس وقت اپنے آپ کو روکا
اور میں خود سعودی عرب اس بار گیا۔ جا کر
کے میں نے اپنی آنکھوں سے دیکھا حاجیوں
کی دردناک دیکھی ہے۔ میڈم۔ آپ جانتی
ہیں اچھی طرح سے کیونکہ آپ کا تعلق بھی
اسی کمیونٹی سے ہے کہ ایک حاجی ملک کے
اندر کھڑے ہو کر کے کبھی کسی کو بد دعا
نہیں دے سکتا۔ مداخلت... لیکن ہم ٹھیک
کے نیچے حاجیوں نے اس طرح کھڑے ہو کر
سچ کیٹی کے نمبر ان کو بد دعائیں دیں تو میں
نے سوچا کہ میرا اس کیٹی میں رہنا ٹھیک
نہیں ہے۔ کیٹی چاہے مکمل طور پر اس کے
لئے ذمہ دار نہ ہو لیکن میں یہ سمجھتا ہوں کہ
پیسہ ہم لیتے ہیں حاجی سے بچانے سے غریب
حاجی کو یہ پتہ نہیں کہ یہاں کیا پائیکس ہے
کس کی غلطی ہے۔ کون ذمہ دار ہے۔ ذمہ داری

بنیادی طور پر حج کیٹی کی ہے۔ اس لئے
میں نے اپنا اخلاقی فریضہ سمجھا کہ اس سے
استغفار دے دیا۔

پہلے تو میں یہ جانتا چاہتا ہوں کہ
میرے استغفار کا کیا ہوا۔ کیا میرا استغفار
ایک سیٹ ہوا یا نہیں۔ کیوں کہ کل دوبارہ حج
کیٹی کی میٹنگ ہو رہی ہے۔ میڈم۔
دوسری بات۔ میں یہ کہنا چاہتا ہوں کہ
میں نے وزیر خارجہ کو... مداخلت نہیں۔
میں بالکل نہیں... مداخلت... میں تو جانتا
چاہتا ہوں کہ طریقہ ہمسہ ہو گیا... مداخلت...
میں صرف یہ جانتا چاہتا ہوں کہ میں نے
... مداخلت...

شرعی و شہریت پر تقویٰ جیسے سنگھ بھر
آج کل کی میٹنگ کی کیا پریشانی ہے۔
شرعی محمد افضل عرف م۔ افضل، و شہریت
بھی۔ میں کچھ بات اس سے رلیٹڈ کہنا چاہ
را ہوں۔ آپ سُن تو لیں۔

ایک بھائی، افضل صاحب۔ آپ
کتھوڑا سنگھ سب میں ابلیس تو چہرانی ہوگی۔
شرعی محمد افضل عرف م۔ افضل میڈم
میں ختم کر رہا ہوں۔ میں نے یہ ڈیمانڈ کی
تھی۔ دوسری جو پریشانی حاجیوں کو ہوتی
وہ انٹر لائنس کے سلسلے میں ہوتی تھی اس
بار انٹر انڈیا نے یہ کہہ دیا تھا کہ ہمارے

پاس جہاز نہیں ہیں۔ انٹر انٹر لائنس نے
جہاز کے حاجیوں کو بے جانے سے انکار کر
دیا اور انٹر انڈیا کو انتہائی جلدی کے اندر
ایر و فلوٹ کے کچھ انٹر کراڈٹ لائن پر لینے
پڑے اور ان سے کانٹرکٹ کیا۔ میڈم۔
میں یہ جانتا چاہتا ہوں کہ کیا ہمارا یہ
فرمان نہیں ہے۔ ہم انٹر انڈیا کے سب سے
بڑے کلائنٹ ہیں یعنی حاجی۔ ہم ہم کر و
رہے ہیں۔ کلائنٹ خریدتے ہیں۔ تو کیا یہ
قانون ایکسچینج باہر جانا چاہیے۔ کیا انٹر
انڈیا کی یہ لائیوٹی نہیں ہے کہ وہ یہ سارا
جو ٹریفک سب خود سینیٹل کو بے۔ تاکہ یہ
ہمارا پیسہ ملک میں موجود ہے آج ہم نے
ایر و فلوٹ کو جو ٹریفک کا پیسہ قانون ایکسچینج
میں دیا کیا ضرورت تھی اسے باہر بھیجنے کی۔
اس لئے میں نے یہ ڈیمانڈ کی تھی جب میں
نے وزیر خارجہ کو یہ خط لکھا تھا کہ رسول
ایو تیشن سنٹرلی کو وہ کہیں کہ وہ ایسا انتظام
کریں کہ ہمارا نیشنل کیرئیر خود حاجیوں کو
بے کر جائے اور ہمارا قانون ایکسچینج ضائع
نہ ہو۔ یہی ڈیمانڈ میڈم۔ میں نے یہ کی تھی
کہ اس حج کیٹی کو فوراً فوراً توڑ دیا جائے
کیوں کہ اس حج کیٹی کے اوپر عوام کا
اعتماد ختم ہو چکا ہے اور میں استغفار اس
لئے دیا ہے حالانکہ مجھے بھائی صاحب نے

خط لکھا ہے کہ کیٹی رنی کانسٹی ٹیوٹ کو
 ہے ہی میٹرم آخری ایک بات
 کہنا چاہتا ہوں۔ جو کہ میں نے
 پہلے بھی اٹھائی تھی اور آپ اس کی طور
 گواہ ہیں اور میں سمجھتا ہوں کہ سمجھ کے
 اندر آپ اس کی طور پر مجھ سے انگریزی کرتی
 تھیں جس وقت میں ممبر تھا اس وقت
 میری موجودگی میں جبکہ میں ممبر تھا کیٹی
 کا ایک ممبر کہ آئے والی کیٹی کے لئے ممبر
 نامزد کیا گیا تھا جو کہ اصولی طور پر غلط
 بات تھی میں نے احتجاج کیا تھا اور یہ
 بھی کہا تھا کہ اگر اس طرح سے کسی ممبر کو
 اہمیت کرنے کی کوشش کی جائے گی تو میں
 استعفیٰ دے دوں گا لیکن میں نے اس
 وقت اس بات کو زیادہ بڑا ایشو نہیں بنایا
 تھا۔ اب کیٹی رنی کانسٹی ٹیوٹ ہونے والی
 ہے اور میں چیئرمین صاحب کو آج ہی
 خط لکھا ہے کہ جو اپائنٹمنٹ پہلے کیا گیا
 تھا۔ وہ غلط تھا۔ وہ رول کے خلاف تھا
 یہ ہماری پریمر انہیں رہی ہے اس لئے
 آپ اس نام کو واپس لے لیں اور جس کو
 بہتر سمجھیں اس کو حج کمیشن کے اندر نامیٹ
 کریں۔ لیکن ایک سال پہلے جو اپائنٹمنٹ
 کیا گیا ہے یا نامیٹیشن بھیجا گیا ہے وہ
 غلط ہے

”سپیلیج“

۱۷-۱۸-۱۹

تہ سہ فرام کہ یہ امر ۱۷-۱۸-۱۹

مولانا ابو بکر علی خان (مؤلف) (مؤلف)
 प्रदेश) : मैं अपने आपको इससे
 मृतालिक करता हूँ ।

† [مولانا عبید اللہ خاں اعظمی :

مہدم - میں اپنے آپکو اس سے
 متعلق کرتا ہوں -]

उपसभापति : अफजल साहब, मैं
 आपको बतलाना चाहूँगी रिकाड के लिए
 कि मेरा कोई ताल्लुक नहीं है। आपने
 कहा कि आपका ताल्लुक है हज कमेटी से
 लेकिन मैं कहता चाहूँगी कि मैं उस हज कमेटी
 की मेंबर नहीं हूँ ।

श्री मोहम्मद अफजल उर्फ मौम
 अफजल : नहीं मैंने, यह नहीं कहा ।

† [شری محمد افضل عرف م - افضل :

نہیں میں نے یہ نہیں کہا -]

उपसभापति : नहीं, आपने कहा कि आप
 मेंबर हैं। मैं कोई मेंबर नहीं हूँ उस हज
 कमेटी की ।

श्री मोहम्मद अफजल उर्फ मौम अफजल :
 मैंम, मैंने यह कहा कि आप जानती होंगी
 कि नक्के में पहुँचने के बाद कोई मुसलमान
 किसी को बददुआ नहीं देता है ।

† [شری محمد افضل عرف م - افضل :

مہدم - میں نے یہ کہا کہ اب
 جانتی ہوں گی کہ ناکہ میں پہنچنے
 کے بعد کوئی مسلمان کو بددعا نہیں
 دیتا ہے -]

श्री नारायण प्रसाद गुप्ता (मध्य प्रदेश) : मैडम, उन्होंने यह कहा कि आप उसी कम्प्यूनिटी को बिलांग करती हैं, इसे रिकार्ड से विद्वा कर दिया जाना चाहिए।

उपसभापति : नहीं, कम्प्यूनिटी नहीं कमेटी।

**Need for taking a Policy Decision
to ensure adequate Funds to
Narmada Project**

श्री अन्तराय देवशंकर दवे (गुजरात) : मैडम, मैं एक गंभीर मसले की ओर सरकार का ध्यान खींचना चाहता हूँ जिसे कि मैंने पहले भी कई बार इस सदन में उठाया है। यह मामला नर्मदा प्रोजेक्ट के बारे में इसके संबंध में थोड़े दिनों से यहां दिल्ली में एक नाटक चल रहा था जोकि कल समाप्त हो गया है। बाबा आमटे ने दिल्ली में धरना दिया और कल उसे समाप्त कर दिया। मैडम, जब हम को वल्टे बैंक ने कह दिया कि आपको हम ऋण नहीं देंगे और सरकार ने भी यह तय कर लिया कि हम वल्टे बैंक से पैसा नहीं लेंगे, मैं जानना चाहता हूँ सरकार से कि वह अपनी पॉलिसी स्पष्ट करे कि वह यह पैसा कहां से लाएगी? इस साल नर्मदा प्रोजेक्ट पर 12 सौ करोड़ रुपया खर्च करना तय हुआ है। 325 करोड़ रुपया गुजरात सरकार दे रही है और ऐसा कहा जा रहा है कि 200 करोड़ रुपया सेंट्रल गवर्नमेंट देने वाली है। मैं यह भी कहना चाहता हूँ 30 जून तक 2509 करोड़ रुपये इस योजना पर खर्च हो चुके हैं और 1200 करोड़ रुपया 1993-94 में खर्च होने वाला है। अब सरकार इन आंदोलनकारियों के दबाव में आकर डैम की हाइट रिब्यू करने का सोच रही है। मैडम, इस डैम से गुजरात, महाराष्ट्र, मध्यप्रदेश और राजस्थान के लोगों को पीने के लिए और खेती के लिए पानी मिलने वाला है और मैं यह भी कर सकता हूँ कि जब इस देश में भाखड़ा नंगल डैम बना तभी से जिस तरीके से गेहूँ का उत्पादन बढ़ा और पंजाब का जिस तरीके से विकास हुआ उसके साथ मैं सारे देश की तरक्की होती जा रही है। इसी तरह यह नर्मदा प्रोजेक्ट अब केवल गुजरात का, महाराष्ट्र का या मध्य-प्रदेश का प्रोजेक्ट नहीं रहा है, अब यह नेशनल प्रोजेक्ट है। मैडम, केन्द्रीय सरकार ने गौरव से कहा है कि हम वल्टे बैंक के

दबाव में नहीं आएंगे, लेकिन मैं कहना चाहता हूँ कि केन्द्रीय सरकार अपनी पॉलिसी यहां रखे कि यह पैसा वह कहां से लाएगी? क्या वह लोन निकालेगी या कोई और रास्ता ढूँढेगी? हम तो कह रहे हैं कि इस प्रोजेक्ट के लिए एन. आर. आई. ज. बांड खरीदने के लिए तैयार हैं लेकिन सरकार की अभी 1.00 P.M. तक कोई पॉलिसी तय नहीं हुई है। मैं यह जानना चाहता हूँ कि आखिर सरकार का रवैया इस बारे में क्या है?

दूसरी बात, महोदया, मैं यह कहना चाहता हूँ कि आंदोलनकारियों के दबाव में आकर डैम की हाइट कम करना उचित नहीं है। यह चारों राज्यों के लिए ही नहीं बल्कि देश के भी हित में नहीं है। हाइट कम नहीं होनी चाहिए। ट्रिब्यूनल का यह जजमेंट है कि उनकी कोई भी चर्चा होगी या रिब्यू होगा तो वह 45 साल बाद होगा। यह आंदोलनकारी, थोड़े कुछ आंदोलनकारी कहीं विस्थापितों के नाम पर, कहीं एनवायरमेंट के नाम पर आंदोलन चलाते रहते हैं, लेकिन उनमें कुछ दम नहीं है। सरकार के रवैये से आज गुजरात, मध्यप्रदेश और राजस्थान के लोगों को लग रहा है कि केन्द्र सरकार का इरादा गलत दिशा में जा रहा है क्योंकि यह आंदोलनकारी के साथ बैठने को तैयार हो गई है। हम चाहते हैं कि यदि आप विस्थापितों के लिए कुछ करना चाहते हैं तो करें। मैं तो यहां तक कहना चाहूंगा कि विस्थापितों को जितना फायदा इस योजना की वजह से दिया गया है उतना सारी दुनिया में कहीं नहीं दिया गया है, कहीं दुनिया भर में नहीं दिया गया है। उन्हें जमीन दी है, उनके लिए पीने के पानी की व्यवस्था की गई है, रहने के लिए घरों की व्यवस्था की गई है।

महोदया, केन्द्र सरकार का इरादा हमें अच्छा नहीं लग रहा है। इसी वजह से मैं आपके माध्यम से मांग करना चाहता हूँ कि केन्द्र सरकार अपनी पॉलिसी तय करे कि वह क्या करना चाहती है और यहां हाउस में आकर बताए कि यह पैसा, संपूर्ण पैसा, जो 560 करोड़ रुपया इस साल में कम पड़ रहा है, वह किस तरीके से देगी, कब देगी?

जो टाइम शेड्यूल नर्मदा योजना का बना है, उस योजना में कोई बाधा न पड़े, उसके लिए